रधेपुराक सूर्य भगवानक दर्शन

– डॉ. शिव कुमार मिश्र

भगवानक दर्शनक क्रममे जखन कोनो मन्दिर जाइत छी तँ कहियो-कहियो कटु अनुभव होइत अछि। एही वर्ष (2022 ई.) 25 जनवरीकें मोन भेल जे रधेपुराक सूर्यक दर्शन कएल जाए। डॉ. सुशान्त कुमारक सङ दरभंगाक महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालयसँ विदा भेलहुँ। प्राचीन भारतीय इतिहास ओ पुरातत्व विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक शोध-छात्र मुरारी कुमार झाकें सेहो ओहि भगवानक दर्शनक लेल आग्रह कएल।

लहेरियासरायक बेतासँ बामा दिस गेलापर रेलवेक गुमटी टपि किछु दूर आगू बढ़लापर सड़कक दहिना कातमे एकगोट मन्दिर परिसर देखबामे आएल जे सलहेस स्थानक नामसँ प्रसिद्ध छँक। जाड़क मास आ साँझक समय। हमरा सभक पहुँचएसँ पहिनहि मुरारीजी ओतय पहुँचि गेल छलाह। हम तीनू गोटे परिसरमे प्रवेश कएल।

सलहेस स्थानक परिसरमे हमरा लोकनि ओहि मन्दिरक खोज करए लगलहुँ जाहिमे सूर्य भगवानक प्रतिमा राखल छल। तावत राजा सलहेस ओ हुनक सहयोगी लोकनिक मूर्तिपर नजरि गेल। मुदा तकरा सटले एकटा छोट सन कोठरीमे सूर्य भगवान माला सभसँ सजल देखबामे अएलाह। मन्दिरक प्रवेशद्वार ततेक ने कम चाकर जे ओहिमे एक बेरमे एकसँ बेसी लोक प्रवेश नहि कऽ सकैत छल। मन्दिरक भीतरमे सेहो कम्मे लम्बाइ-चौड़ाइ। एक बेरमे मात्र एकटा पुजारी पूजाकऽ सकैत छथि।

तावत देखल जे एकगोट व्यक्ति चौधरीजी सूर्य भगवानक प्रतिमाक दुनू पाएरक बीचमे अपन मूड़ी राखि साधनामे लीन छथि। आब ओ पूजा समाप्त कऽ निकलताह, तखनहि दोसर गोटे प्रवेश कऽ सकताह। तें हुनक साधनाक पूर्ण होएबाक प्रतीक्षा हमरा लोकनि करए लगलहुँ। मुदा ताहि बीच सुशान्त जीक मुँहसँ निकलल जे सूर्य भगवानक ई मूर्ति 2010 ई.मे भेटल छल। एतबा सुनितहि चौधरी जी तमकि उठलाह – "के बजलहुँ जे ई सूर्यक मूर्ति थिक?" भगवानक पाएरपर सँ मूड़ी उठाए झगड़ा करबाक मुद्रामे बहस करए लगलाह। झगड़ा करबाक लेल ओ तैआर आ हाक देबए लगलाह। सुशान्त जी डेराए गेलाह आ नहुँ-नहुँ चौधरीजी दिस डेग बढ़बए लगलाह। हम संकेत कएल जे किछु नहि बाजू। हुनकहि सुनल जाए।

सएह भेल। चौधरीजी मूर्तिकलाक विशेषज्ञ जकाँ प्रतिमाक अंग-प्रत्यंगक विस्तारसँ परिचय करबैत पढ़बए लगलाह। हमरा लोकनि आज्ञाकारी बालक जकाँ सुनए लगलहुँ। एकतरफा हुनक प्रवचन हमरा लोकनि सुनैत रहलहुँ। हुनक प्रवचनसँ ऊबि हमरा लोकनि पड़एबाक उपक्रम करए लगलहुँ, मुदा ओ छोड़बाक लेल तैआर नहि। चौधरीजी कतेको तर्क ओ ज्ञानक खर्च कएलनि, मुदा एहि विषयपर नहि पहुँचि सकलाह जे एहि प्रतिमाकें ओ कोन भगवान मानैत छथि। जखनकि सूर्य भगवानक नाम लेलापर ओ भड़कि गेल छलाह। सूर्यक नामपर आपत्ति छलनि।

जाड़क मासक समय छल आ राति बढ़ल जा रहल छल। चौधरीजी पूजा-स्थल छोड़बाक लेल तैआर नहि आ संगहिं मूर्ति-विज्ञान सेहो आइ पढ़ाइए कऽ छोड़ताह, ताहि लेल कोनो हड़बड़ी नहि। ओमहर मन्दिरक पुजारीजी जाड़े कठुआ रहल छलाह। हुनका जर लागल छलनि, तें मन्दिर बन्द कऽ जल्दी अपन घर जाए चाहैत छलाह।

हम चौधरीजीसँ विनम्र निवेदन करैत पूछल – "अपनेक पूजा कतेक काल आओर चलत?" कहलनि जे दस मिनट आओर लागत। हमरा लोकनि मन्दिरसँ बाहर निकलि प्रतीक्षा करए लगलहुँ।

दोसर कोठरीमे सलहेसक प्रतिमा बनल छल। विचारलहुँ, हुनकहि तावत देखल जाए। राजा सलहेस हाथीपर विराजमान छलाह एवं हुनक सहयोगी सभ दुनू दिस घोड़ा पर सवार। हाथमे फुलतोरा लए एकटा स्त्रीक विलक्षण प्रतिमा। एकटा पहलमान ठेहुनियाँ दए बाँहि चढ़ा रहल छलाह। ई सभटा माटिक मूर्ति बेस रङल-टिपल छल।

हमसभ ओतेक देरधरि राजा सलहेसक मूर्ति सभक अवलोकन कएल, तथापि चौधरीजी तपस्यामे लीने रहलाह। सूर्य भगवानक दुनू पाएरक मध्य हुनक मूड़ी जे राखल छल, से उठबे नहि करए।

एमहर जाड़ बढ़ल जा रहल छल। हम अपन सहयोगी लोकनि तथा पुजारीजीक सङ चौधरीजीक तपस्या समाप्त होएबाक प्रतीक्षामे रही। भगवानसँ हमहूँ सभ प्रार्थना करैत रही – "हे सूर्य भगवान! हमरा सभपर कृपा कए चौधरीजीसँ जान बचाउ।"

बड़ीकालक बाद भगवानक पाएरपर सँ चौधरीजीक मूड़ी उठलनि। हमरा लोकनि उत्साहित भेलहुँ, मुदा आब तेसरे लीला शुरू भऽ गेल। चौधरीजी दुनू हाथसँ भगवानक दुनू पाएर छुवैत छलाह आ फेर अपन दुनू कानमे सटबैत छलाह। ई प्रक्रिया बड़ीकालधरि चलल। हमरा लोकनि फेर चिन्तामे पड़ि गेलहुँ जे ई तँ दोसरे आसन भऽ रहल अछि। कतेक प्रकारक आसन करताह, से नहि जानि। फेर देखल जे चौधरीजी उठलाह आ भगवानक प्रतिमाकें भरि पाँजमे लऽ आलिंगन मुद्रामे आबि गेलाह। ईहो प्रक्रिया कतोक बेर भेल। तखन देखल जे चौधरीजी धुपबत्ती जरौलनि आ आरती गाबए लगलाह। एमहर हमरा लोकनि जाड़सँ ठिठुरि रहल छलहुँ।

बड़ीकालक प्रतीक्षाक बाद चौधरीजीक आराधना समाप्त भेल। तखन हमरा लोकनिकें जानमे जान आएल। फेर कुशल-क्षेम भेल। कहलनि – "हम गामक मुखिया छलहुँ। एहिबेर कनिएँ भोटसँ हारि गेल छी।" बेस कहि आ हुनका मोनहि मोन प्रणाम कए सूर्य भगवानक दर्शनक लेल हमरा लोकनि मन्दिरमे प्रवेश कएल। भगवानक दर्शन भेल।

सूर्य भगवान कारी पाथरक छथि। सूर्यक मूर्ति विलक्षण छैक। कतोक माला ओ फूलसँ भगवान सजाओल गेल छलाह। माला ओ फूल सभ हँटएलाक बाद प्रतिमाक नापी भेल। मूर्तिक आकार 135 x 67 से.मी. छैक। भगवानक दुनू हाथमे कमलक डंटी छनि। दुनू हाथ ऊपर दिस उठल छनि आ तकरा उपर कमल फुलाएल अछि। ई कमल शिलापीठिकापर बनल छैक। सूर्यक प्रभामंडलक दुनू दिस बनल अछि ई दुनू कमल। प्रभामंडलक उपरमे आगिक धधराक अंकन छैक। दुनू दिस उड़ैत विद्याधरक अंकन छैक जिनका हाथमे माला छनि। सूर्यक माथक मुकुट नमगर छनि। दुनू कानमे कुण्डल ओ गरदनिमे हार विलक्षण छैक। बामा कान्हपर सँ जनेऊ छाती होइत बामा जाँघधरि लटकि रहल छनि जे दहिना जाँघ होइत पाछू दिस गेल छैक। जनेऊ बेस मोटगर छैक। डाँड़मे डँड़कस छनि आ ठेहुनसँ नीचाँ छाबाधरि धोती छनि। डाँड़मे तरुआरि ओ पाएरमे जुत्ता छनि। दुनू पाएरक बीचमे सारथी ठाढ़ छथि जे सातोटा घोड़ाक रासिकें हाथमे लए हाँकि रहल छथि। पाछूमे महाश्वेता देवीक अंकन छनि जे ठाढ़ि छथि। सूर्यक बामा दिस दंड ओ दहिना दिस पिंगलक अंकन अछि। दंड अपना हाथमे मूसर रखने छथि जखनकि पिंगलक हाथमे कलम-दवात छनि। सूर्यक दुनू दिस हुनक स्त्री संज्ञा ओ निक्षुभा ठाढ़ि छथि। उषा ओ प्रत्यूषा धनुष-वाण तानि कऽ दुनू दिस ठाढ़ि छथि। धनुष-वाणसँ ओ दुनू अन्हारकें नष्ट कऽ रहलि छथि।

सूर्यक मूर्तिक पाछू जे शिलापीठिका छैक, से बेस चिक्कन। अलंकरण कम्मे छैक। कतहु-कतहु किछु-किछु बनाओल गेल छैक। सूर्यक पाछू कटाओ अछि। शिलापीठिकाक शीर्ष गोल अछि। एहिपर ने कीर्तिमुखक अंकन छैक आ ने फूलक। सूर्यक मूर्तिक भाव देखि स्पष्ट होइछ जे ई मूर्ति कर्णाटकालक अर्थात् बारहम-तेरहम शताब्दीक अछि।

विष्णुक बाद सभसँ बेसी सूर्य भगवानक मूर्ति मिथिलामे भेटल अछि। ताहिमे सभसँ बेसी कर्णाटकालक अछि। पछिला साल सहरसा जिलाक सिमरी-बख्तियारपुर प्रखंडक कोनो गामक मटेश्वर स्थान मन्दिर परिसरमे दूगोट सूर्यक मूर्ति भेटल अछि जे सातम-आठम शताब्दीक अछि। ताहिसँ पहिने गुप्तकालक सूर्यक मूर्ति वैशाली जिलाक चेचरसँ भेटल अछि जे एहि क्षेत्रक प्रायः सभसँ प्राचीन सूर्य प्रतिमा थिक। गंगाक उतरबरिया कातमे एकटा बुद्धक मंदिरक ताखपर सीमेन्टसँ जमाओल गेल अछि ई मूर्ति।

पोखरिक उराही, सड़क निर्माण प्रभृति कतोक निर्माण-कार्यक क्रममे माटि खुनबाक काल ठाम-ठाम विभिन्न देवी-देवताक प्रतिमा भेटि रहल अछि। ताहिमे बेसी सूर्य ओ विष्णुक मूर्ति भेटैछ। पूर्व-मध्यकालीन मिथिलामे सूर्योपासनाक निस्सन प्रमाण ई प्रतिमासभ अछि। विशेषकऽ कर्णाटकालक जे मूर्तिसभ भेटैछ, से ताहिकालक धार्मिक ओ सामाजिक अवस्थाक दर्पण थिक।

मुदा, अपना धरोहरिक संरक्षणक प्रति मैथिल समुदायक जे उदासीनता वा वितृष्णा अछि, से अत्यन्त दुखदायी अछि। बुधिआरीक दम्भ भरनिहार मैथिल समुदायक किरदानीसँ एक-एककऽ प्राचीन मूर्ति अलोपित भऽ रहल अछि।

माटिक तरसँ मूर्ति भेटलापर एकटा उन्माद उत्पन्न कएल जाइछ समाजमे। पूजा-पाठ, कीर्तन-नवाह, मन्दिर-निर्माण आदि लेल बेहरी-तसीली शुरू भऽ जाइछ। मुदा, किछु दिनक बाद जखन उन्माद शान्त होइछ, तस्कर ओकरा निपत्ता कऽ दैत छैक। ओ उन्मादी गिरोह घरमे सुतले रहि जाइत अछि।

पछिलो किछु बर्खमे कतोक दुर्लभ मूर्तिक चोरि भऽ गेल। समाजक कोनो वर्गक संस्थान एकरा लेल कोनो प्रकारक प्रयास नहि कएलक। समाजक किछु उन्मादी लोकक प्रवृत्तिक कारणें मिथिला अपन धरोहरिसँ वंचित भेल जा रहल अछि।

एहि बीच दरभंगा जिलाक घनश्यामपुर थानान्तर्गत हरद्वार गामक शिव-मन्दिरसँ गरुड़नारायण केर दुर्लभ मूर्ति चोरि चल गेल। ईहो मूर्ति कर्णाटकालक छल ओ दुर्लभ छल, मुदा समाजक कोनो वर्ग एकर ताकुत करबाक लेल आगू नहि आएल। की भगवानक मूर्तिक ओतवी कालधरि मतलब छैक जावतधरि ओकरा नामपर आमदनी होइत रहए? की रक्षा करबाक भार सेहो ओही समाजपर नहि छैक?

⊘

(पृष्ठ - 44 क शेषांश)

जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक मतसँ भिन्न अछि। जॉर्ज ग्रिअर्सनक औपभाषिक वर्गीकरण विवादक कारण भेल अछि। पण्डित श्री गोविन्द झाक वर्गीकरण तकर समाधान करैत अछि। ओ वर्गीकरणक तीन आधार मानल अछि – (1) क्षेत्र, (2) सामाजिक वा शैक्षणिक स्तर तथा (3) जाति। क्षेत्रक अनुसार ओ (1) पूर्वी (नव क्षेत्रीय नामकरण अंगिका, ग्रिअर्सन - छिकाछिकी एवं गँवारी), (2) दक्षिणी, (3) पश्चिमी (नव क्षेत्रीय नामकरण वज्जिका, ग्रिअर्सन - पश्चिमी मैथिली), (4) उत्तरी वा नेपाल तथा (5) केन्द्रीय।

एहि विभाजनक आधार मैथिलीक भाषायिक चौहद्दी थिक; जेना – पूर्वमे बंगला, पश्चिममे भोजपुरी, दक्षिणमे मगही आ उत्तरमे नेपाली। अभिसरण सिद्धान्त (Theory of Convergence)क अनुसार सम्पर्कसँ भाषा सेहो प्रभावित होइत छैक। एहि हेतु केन्द्रीय मैथिलीकें छोड़ि बाँकी चारूकातक मैथिली अपन समीपस्थ भाषासभसँ प्रभावित होइछ आ जे अप्रभावित रहल तकरा मानक मैथिली कहल गेल अछि। ख्यातिलब्ध भाषा-वैज्ञानिक डॉ. रामावतार यादवक मत सेहो एहिसँ भिन्न नहि अछि।

एहि प्रकारें मिथिलाक उज्ज्वल आ गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परामे आधुनिककालक एक महत्त्वपूर्ण अक्षर-पुरुष छथि पण्डित श्री गोविन्द झा। पण्डित झा एकहिठाम यशस्वी साहित्यकार, प्रकाण्ड पण्डित आ भाषाशास्त्री, स्वतंत्र विचारक, निर्भीक वक्ता, विविध भाषावेत्ता, सुपटु व्यवहारविद् ओ एक सफल अनुवादकक रूपमे ख्याति अर्जित कऽ विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानक मध्य मिथिला, मैथिली आ मैथिलक गौरवकें बढ़ाओल अछि। ओ मिथिलाक गौरवशाली परम्पराक पायाकें अपन अध्ययन-अनुशीलन, मनन-चिन्तन तथा अथक परिश्रमसँ निरन्तर सुदृढ़ कएल अछि।

प्रो. आनन्द मिश्रक कहब सर्वथा समीचीन छनि – "जे मैथिली भाषा ओ साहित्यक महलक चारू खाम्ह – कोश, व्याकरण, छन्द एवं अलंकारकें मजगूत कएलक; जे अपन नाटक, कथा, कविता एवं उपन्यासादि लिखि मा मैथिलीक भंडारकें समृद्ध कएलक; जे सतत अपना माटि-पानिसँ सटल रहैत अपना चारूकातक साहित्यिक गतिविधि देखैत अपन मातृभाषाक उत्थानक दिशामे सतत प्रयत्नशील रहल; तकर मात्र चर्चा पर्याप्त नहि, अर्चा सेहो उचित।"

आजुक ई आयोजन तकरे निर्वाह थिक। एहि लेल साहित्य अकादेमी आ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह कॉलेजकें जतेक धन्यवाद देल जाए, थोड़ होएत। आ हमरा जे अवसर देलनि, ताहि लेल आभार। धन्यवाद!

गोविन्दाय नमो नमः।

सन्दर्भ संकेत :

1. E. Annamalai, *Goals and Strategies of Development of Indian Languages*, Ed.CIIL. Mysore, 1998 - "Developmentof creative literature is one aspect of language development. But for many department in the states in India, it is the primary programme and this distorts language development. One of the important concerns of language is providing access to a wide range of information and knowledge and creation of non-literary content in the language is very crucial to provide this."

⊘

की कतय

'देसिल बयना' प्रबन्धन निकाय

सलाहकार समिति

डॉ. अहिल्या मिश्र (98497 42803)
प्रो. (डॉ.) आर.के. मिश्रा (98492 53521)
श्री अरुण कुमार झा (94901 67335)
श्री किशोर कुमार ठाकुर (94400 00808)
श्री खगेश कुमार झा (9849018738)
डॉ. सुनिल कुमार चौधरी (93470 76326)
डॉ. अजित कुमार ठाकुर (94925 31592)

संस्थापक संयोजक : स्मृतिशेष दयानाथ झा

संचालक मंडल

अध्यक्ष	:	श्री चन्द्र मोहन कर्ण	(94913 06010)
उपाध्यक्ष	:	डॉ. चन्द्र शेखर झा	(93920 48008)
	:	श्री शम्भू नाथ झा (बी.एच.ई.एल.)	(77805 43331)
महासचिव		श्री मनोज शाण्डिल्य	(98660 77693)
सचिव	:	श्री दीपक कुमार झा	(97055 28180)
कोषाध्यक्ष	:	श्री जयचन्द्र झा	(96520 05073)

कार्यकारिणी सदस्य

श्रीमती अर्चना झा (95500 69471)
श्रीमती कल्पना झा (73962 57053)
श्रीमती शारदा झा (98660 77694)
श्रीमती मीनाक्षी चौधरी (98850 53364)
श्री राम विनोद झा (92461 11185)
श्री सुमन कान्त झा (99639 12385)
श्री रवीन्द्र कुमार झा (95337 78114)
श्री तरुण प्रभात (72800 66412)
श्री मनोज कुमार झा (98498 37377)
डॉ. सन्तोष चौधरी (95027 12603)

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक	:	श्री चन्द्र मोहन कर्ण (94913 06010)
सहायक सम्पादक-1	:	श्री मनोज शाण्डिल्य (98660 77693)
सहायक सम्पादक-2	:	श्री गुंजनश्री (93869 07933)

𑒠𑒹𑒮𑒱𑒪 𑒥𑒨𑒢𑒰

देसिल बयना

मैथिली साहित्य मंच

विद्यापति स्मृति गोष्ठी स्मारिका

पौरुषम अर्घ्य

हैदराबाद-सिकन्दराबाद

13 नवम्बर, 2022